

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ माला—2

ज्ञानोदयतन्त्रम्

JÑĀNODAYA TANTRAM



भोट विद्या संस्थानम्

सम्पादक :

प्रो० समदोड रिनपोछे
योजना निदेशक

प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी
उपनिदेशक

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३१

ख्रीष्टाब्द १९८८

सहायक मण्डल
जनार्दन पाण्डेय डॉ० ठाकुरसेन नेगी
बनारसी लाल महेन्द्ररत्न धज्जाचार्य
वङ्छुग दोर्जे

मूल्य : रु० १५.००

©केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, 1988

प्रकाशक :

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

मुद्रक :

रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी० 21/42 ए०, कमच्छा, वाराणसी

RARE BUDDHIST TEXT SERIES—2

JÑĀNODAYA TANTRAM



भोट विद्या संस्थानम्

Editors :

PROF. SAMDHONG RINPOCHE

Project Director

PROF. VRAJVALLABH DWIVEDĪ

Deputy Director

RARE BUDDHIST TEXT PROJECT
Central Institute of Higher Tibetan Studies
SARNATH, VARNASI

B. E. 2531

C. E. 1988

Co-Editors

Pt. Janārdana Paṇḍeya

Dr. Thākura Sain Naga

Banārasī lāl

Mahendr Ratn Vajryāchārya

Ven. Wangchuk Dorje

Price : Rs. 15.00

© Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath. 1988

Published by :

Central Institute of Higher Tibetan Studies.
Sarnath, Varanasi.

Printed by :

Ratna Printing Works, Kamachha, Varanasi.

प्रस्तावना

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना की परामर्शदात्री समिति के दिनांक 11-8-1987 के निर्णय के अनुसार 'धीः' के इस चतुर्थ अंक में ज्ञानोदयतन्त्र का प्रकाशन किया जा रहा है। यह तन्त्र क्रिया, चर्या, योग और अनुत्तर विभागों में विभक्त बौद्ध तन्त्रों के योग विभाग के अन्तर्गत आता है।

इसमें चित्त, वाक् और काय चक्रों के अन्तर्गत ध्येय दस भूमियों और चौबीस पीठों का विवरण देने के बाद शरीर में स्थित नाड़ियों और चक्रों का विवरण देकर उनकी भावना का प्रकार बताया गया है। इसके बाद सहजप्रज्ञा योग, वसन्ततिलक योग, समुत्पन्नक्रम योग और प्रज्ञोपाय योग का विवरण देकर षट्चक्र विशुद्धि और पंचज्ञान विशुद्धि की भावना का विस्तार किया गया है।

यह ग्रन्थ अतिसंक्षेप में बौद्ध तन्त्रों में वर्णित योग का समग्र वर्णन प्रस्तुत करता है। इस ग्रन्थ का तिब्बती अनुवाद उपलब्ध नहीं होता। इन विशेषताओं को देखते हुए ही दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना द्वारा प्रकाशनीय ग्रन्थों में इसका समावेश किया गया था। इसको विज्ञ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

जिन 11 हस्तलेखों के आधार पर इस ग्रन्थ के पाठों का निर्धारण किया गया है, उनका विवरण इस प्रकार है :—

क—राष्ट्रीय अभिलेखालय काठमाण्डू, नेपाल सं० 31658, पत्र सं० 11, देवनागरी लिपि, पूर्ण। श्री जगन्नाथ उपाध्याय जी के संग्रह की प्रतिलिपि।

ख—रा० अ० का० ने० सं० 5139, पत्र सं० 19, नेवारी लिपि, पूर्ण। श्री जगन्नाथ उपाध्यायजी के संग्रह की प्रतिलिपि।

ग—रा० अ० का० ने० सं० 31338, पत्र सं० 20, देवनागरी लिपि, पूर्ण। डा० ठाकुरसेन नेगो के पास की प्रतिलिपि।

घ—इंस्टिट्यूट फार एडवांस स्टडीज आफ वर्ल्ड रिलिजन्स, अमेरिका एम० बी० बी०-II-184, पत्र सं० 13, नेवारी लिपि, पूर्ण। माइक्रोफिश के० ति० उ० शि० सं० सारनाथ, वाराणसी। फोटो प्रिंट तथा जिराक्स प्रति अस्पष्ट है।

ङ—इंस्टिट्यूट फार...अमेरिका, एम० बी० बी०-I-120, पत्र सं० 20, नेवारी लिपि, अपूर्ण (9-11) पत्र नहीं हैं। माइक्रोफिश के० ति० उ० शि० सं०। माइक्रोफिश अस्पष्ट है।

च—इंस्टिट्यूट फार...अमेरिका, एम० बी० बी०-I-72, पत्र सं० 13, नेवारी लिपि, अपूर्ण (अन्त में खण्डित)। माइक्रोफिश के० ति० उ० शि० सं०।

छ—संस्कृत मैक्युस्क्रिप्ट इन टोक्यो युनिवर्सिटी लाइब्रेरी जापान, सं० 143, पत्र सं० 11, नेवारी लिपि, पूर्ण। माइक्रोफिल्म के० ति० उ० शि० सं०।

ज—संस्कृत मैक्युस्क्रिप्ट इन टोक्यो...सं० 142, पत्र सं० 20, देवनागरी लिपि, पूर्ण। माइक्रोफिल्म के० ति० उ० शि० सं०।

झ—आशा सफू कुशी संग्रह, काठमाण्डू, सं० 21634, पत्र सं० 26, देवनागरी लिपि, पूर्ण। जिराक्स प्रति के० ति० उ० शि० सं०।

ञ—गायकवाड़ ओरियन्टल, इन्स्टिट्यूट बड़ौदा, सं० 13279, पत्र सं० 9, देवनागरी लिपि, पूर्ण।

ट—इन्स्टिट्यूट फार...अमेरिका, एम० बी० बी०-I-74, पत्र सं० 19, नेवारी लिपि, माइक्रोफिल्म प्रति के० उ० ति० शि० सं०। अस्पष्ट एवं अपठनीय।

इन 11 हस्तलेखों की सहायता से सावधानी के साथ संशोधन और सम्पादन करने के उपरान्त भी इस ग्रन्थ के कुछ स्थान अभी पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो पाये हैं। इस सम्बन्ध में हम विद्वानों के सुझाव का स्वागत करेंगे।

इस ग्रन्थ के हस्तलेखों को सुलभ कराने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने सहायता की है, जिनका कि नाम निर्देश ऊपर किया जा चुका है, उनका हम आभार स्वीकार करते हैं। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना में कार्यरत विद्वानों को भी हम धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने बड़ी तत्परता से पाठसंकलन, सम्पादन अदि कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न कर परिष्कृत रूप में इस ग्रन्थ को प्रस्तुत किया है।

एस० रिन्पोछे

निदेशक

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना

PREFACE

The *Jñānodaya Tantra* which is of the Yoga genre of the Buddhist Tantra as of the three other classes, the Kriyā, the Caryā and the Anuttara Tantras, is being published here as a part of the first volume of the Rare Buddhist Minor Text Series, appearing in the *Dhī* review.

The text enumerates under wheels of the mind, speech and body the ten grounds (Bhūmis) and the twenty four establishments (Pīṭhas) to be reflected upon. These postulates precede the description of the nervous system and the numerous *Cakras* in the body. The awareness of the vital limbs is important in the comprehension of the esoteric system. The work further elicits understanding of the Sahaja-Prajñā Yoga, Vasanta-Tilaka Yoga, Samutpann-Krama Yoga and the Prajñopāya Yoga with the purifying methods of the six cakras and the five sensory perceptions.

The work presents a total view of yoga, as found in Buddhist esotericism. The Tibetan translation of the text has not been found. Keeping in view these importance the work is included in the texts to be published by The Project. We are happy to bring it out for the readers.

For the presentment of the text in its edited form acknowledgement is due to the following organisations for furbishing the contextual matters.

- a. National Archives of kathmandu, Nepal. Ms. No. 3/658 fol. 11, Devanāgarī Script—Complete. Ms-in Prof. J. Upadhyaya's private collections.
- b. NAKN. Ms. No. 5/39, fol, 19, Nevārī Script, Complete, J (Ms)
- c. NAKN, Ms. No. 3/338, fol. 20, Devanāgarī Script, Complete. Ms with Thakur Sen Negi.
- d. Institute for Advanced Studies of World Religions, U S A, Ms. No. MBB. II-184, fol, 13, Nevārī Script, complete, microfische copy in the Śāntarakṣhita Library, Saranath.

- e. IASWR, U S A, Ms No. MBB, I-120, fol. 20, Nevārī Script, incomplete, microfische copy in Śāntarakṣhita library, Saranath.
- f. IASWR, Ms. No. MBB, I-72, fol. 13-Nevārī Script, incomplete fragile last part. microfische copy. in Śāntarakṣhita Library, Saranath.
- g. Sanskrit MSS in Tokyo University Library, Japan. MS. No. 143, fol. 11, Nevārī Script, complete, microfilm, Śāntarakṣhita Library, Saranath.
- h. SMTUL, MS. No. 142, fol. 20, Devanāgarī Script, complete, microfilm, Śāntarakṣhita Library, Saranath,
- i. Āshā Safu Kuśi collections, Kathmandu, MS. No. 2/634, fol. 26, Devanāgarī Script, complete, zyxox copy in the Śāntarakṣhita Library, Saranath.
- j. Gaekwad Oriental Institute, Baroda, MS. No. 13279/29 fol. 9. Devanāgarī Script, complete.
- k. IASWR, U S A, MS. No. MBB--174, fol. 19, Nevārī Script, microfische copy in the Śāntarakṣhita Library, Saranath, illegible.

We are very grateful to individuals and the Institutes which made the manuscripts available for us. I also express my pleasure for the work done by the scholars of the project in bringing it out in an accomplished form.

S. Rinpoche

Director

Rare Buddhist text Project

विषयसूची

प्रस्तावना	V
Preface	VII
महासुखचक्रं बुद्धभूमिवज्रमतितत्त्वं त्रिलोकं त्रिकायम्	1
पीठ-उपपीठचित्तचक्रं विमलभूमिशीलसमुदयस्थानम्	2
क्षेत्रं प्रभाकरीभूमिक्षान्तिनिरोधस्थानम्	3
उपक्षेत्रम् अर्चिष्मतीभूमिवीर्यमार्गज्ञानम्	3
छन्दोह अभिमुखीभूमिध्यानक्षयज्ञानम्	3
उपछन्दोह सुदुर्जयाभूमिप्रज्ञाऽनुत्पादज्ञानम्, इति वाक्चक्रम्	3
मेलापकं दुरंगमाभूमि उपायो धर्मज्ञानम्	3
उपमेलापकमचलाभूमिप्रणिधानमद्वयं ज्ञानम्	3
श्मशानं साधुमतिभूमिबलसंवृतिज्ञानम्	3
उपश्मशानं धर्ममेधा-ज्ञानपरिचितज्ञानम्, इति कायचक्रम्	4
नाडीचक्रात्मकपरमगम्भीरोत्पन्नक्रमः	4
चतुश्चक्रभावनायोगः	5
सहजप्रज्ञायोगः	6
नाडीत्रयभावनायोगः	7
वसन्ततिलकयोगः	8
समुत्पन्नक्रमयोगः	8
प्रज्ञोपाययोगः	9
षट्चक्रविशुद्धिः	10
पञ्चज्ञानविशुद्धिः	13
श्लोकार्धानुक्रमणी	15
विशिष्टशब्दानुक्रमणी	17

ज्ञानोदयतन्त्रम्

ॐ नमः ^१सर्वज्ञाय^२

अथातः संप्रवक्ष्यामि ज्ञानं ज्ञानोदयोत्तमम् ।

शरीरार्थं^३ च सर्वेषां ज्ञात्वा ^४यद्वेतुकारणात् ॥ १ ॥

गिरिगुहायां महोदधौ नदीतीरे वृक्षमूले मातृकागृहे शिवालये उद्याने श्मशाने^५
चतुष्पथे विहारे चैत्यालये वा गृहे विजने निरुपद्रवेऽनुकूले कृतनिलये एषु स्थानेषु
प्रदर्शयेत् ।

स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहमिति, प्रकृतिपरिशुद्धाः सर्वधर्माः
प्रकृतिपरिशुद्धोऽहमिति निश्चित्य^६ [चित्ते] स्वदेहे ^७वाऽऽधाराधेयमण्डलमधिमुञ्चेत्^८ ।
अनेन शरीरं कूटागारं^९ समं^{१०} चतुरस्रं चतुर्द्वारं^{११} चाष्टभिरङ्गैरष्टस्तम्भैः शोभितं
मध्यमण्डलं रम्यं पञ्चतथागतं^{१२} पञ्चकामात्मकं^{१३} पञ्चचक्रम् । तत्र रोमाणि
कीरकान्^{१४} चर्ममांसवज्रप्राकारमस्थिपञ्जरं वज्रपञ्जरं^{१५} थूलामाला^{१६} मलजालं च
मणिवज्रवितानम्—

^{१७}वितानं ^{१८}वारसिंहं च मध्ये^{१९} ऽष्टस्तबकं हृदि ।

कोणे^{२०} ऽष्टस्तबकं ज्ञात्वा खेटो^{२१} फूफुसवुक्कचाः ॥ २ ॥

चण्डालीज्वाला^{२२} मालानलार्कः^{२३} पण्यादिकं वज्रमयमधिमुञ्चेत् । अन्तरालं
धर्मोदयमधिमुञ्चेत् । तत्र ^{२४}कबन्धोऽर्धद्वयशूलभिन्नादिसु(सू)चकैश्चक्रं^{२५} मनःस्थानं
पश्येत् । निषद्यादिकारकैर्द्विपुटं^{२६} त्वेन द्विगुणं पृथिव्यसेजोवायुधात्वात्मकैः परिगतानद्यौ
धातुं(तून्) स्वसनि(न्नि)त्यतया युक्ता[न]द्यौ श्मशानानधिमुञ्चेत् ।

१. श्रीसर्व-च । २. 'ॐ नमः श्रीचक्रसंवराय' इत्यधिकः पाठः-घ. । ३. र्थश्च-क. ज. । ४. ये
हेतु-ख. छ. झ. ञ. । ५. नास्ति-च. । ६. निश्चिते-क. ग. ज. झ. । ७. वाधावाधेय-क. ख. ग. घ. ङ. च. छ. ।
८. मुच्येत्-क. ग. घ. ज. । ९. कूटाङ्गारं-घ. छ. ज. ञ. । १०. समचतुरस्रचतुर्द्वारैः-च. ।
११. वाष्ठाभि-ङ. । १२. पञ्चकात्म-ख., पञ्चकायात्म-क. घ. च. छ. ज. झ. । १३. पञ्चक्रमं-छ. ।
१४. कील-छ. । १५. थूला-ख. च. छ. झ. ञ. थूल-घ. । १६. मालासरजालं-ख. ग. घ. च. ज. झ. ञ. ।
१७. वीता-क. ग. ङ. । १८. वाल-छ. । १९. मध्यछास्ते-ग. ज., मध्यस्थं-घ., ष्ठं-ङ. च. झ. ।
२०. कोणछां-ङ. च. ज. झ. । २१. खर्वे-क. । २२. ज्वालावज्रज्वालानला-ख. घ. ङ. च. झ. ञ. ।
२३. पश्या-ज. ञ. । २४. कबन्धोद्धतवशायित-क. ख. ग. घ., दशा-ङ. झ. ञ., द्वादशा-च. ।
२५. चक्रमणस्था-घ. छ. ञ., मशस्था-क. ग. ज., मूलस्थानं-ङ. । २६. द्विप्रभ-क., द्विपुल-ग., द्विपूत-झ. ।

ततः पादद्वयं(ये) धन्वाभं वायुमण्डलम्, नाभितले त्रिकोणमाग्नेयमण्डलम्, जठलं(रे) वर्तुलं वारुणमण्डलम्, कक्षस्थं(स्थे) चतुरस्रं माहेन्द्रमण्डलमधिमुञ्चेत् । उत्तमाङ्गमष्टशृङ्गसुमेरुमधिमुञ्चेत् । ततस्तत्पृष्ठेऽधिष्ठितं द्वात्रिंशद्दलकमलं तन्मध्ये चन्द्रमण्डलं तन्मध्यगता नाडी ¹सूक्ष्मं ²खगमुखाकारमनाहतमालिकालिज³हूंकारं वज्रसत्त्वस्वरूपं ष[ट्]त्रिंशन्नाडीजनकं समधिमुञ्चेत् । तदुद्भवचन्द्रफलभवैः⁴ शशाङ्क-संकाशं सहजसंभोगकायात्मकं ⁵कालिस्वभावमुपायरूपं सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानात्मकं श्रीहेरुकम्, ततः सहजनिर्माणनभोनिभं सर्वाङ्गप्रत्यङ्गसर्वाशाकाशव्यापकं स्व[ः]भाविक-कायात्मकमालिस्वभाव(वं) ⁶प्रज्ञारूपं ⁷शु(सु)विशुद्धधर्मधातुस्वभावं ⁸वज्रवाराहीमधि-मुञ्चेत् ।

ततः समयचक्रात्मके तारु(लु)कमले पूर्वदले भगवतः पूर्वमूर्ति[:] शब्दवहा दर्शनज्ञानरूपा शशानामनाडी डाकिनी, उत्तरमूर्तिर्गन्धवहा समताज्ञानरूपा क्षीरवहानाम-नाडी लामा । पश्चिमदले पश्चिममूर्ति[:] रसवहा प्रत्यवेक्षणाज्ञानस्वभावस्निग्धा नाडी खण्डरोहा, दक्षिणदले दक्षिणमूर्तिः स्पर्शवहा कृत्यानुष्ठानरूपा मधुरानामनाडी रूपिणी । हृत्कमल इत्यपरमुखचतुर्षु ⁹इत्ये[व] लोक[ः] कथयन्ति, त्रिकोणेषु पत्रेषु च¹⁰ सहस्रं प्रनाडिकाः¹¹ बोधिचित्तवहा वाहे(बाह्ये) ¹²चतुःपूजारूपा बोधिचित्तकरोटकाः ।

इति महासुखचक्रं बुद्धभूमिवज्रमतितत्त्वं त्रिलोकं त्रिकायम्

ततः पूं जां ऊं आं गों लां दं¹³मां कां वं¹⁴ त्रि कां¹⁵ कां कां¹⁶ लां¹⁷ कां ह्रीं प्रं¹⁸ गुं सां¹⁹ सुं²⁰ नं सिं ²¹मं कूं²² इति बीजाक्षराणि यथास्थानं क्रमेण भावयेत् ।

ततः पुल्लिरमलयशिरसि खण्डकपालि²³नखदन्तवहा अजानाडी प्रचण्डा, जालन्धरशिखायां महाकङ्कालकेशरोमवहा नाडी चण्डाक्षी, ओडियानदक्षिणकर्णे कंकार-(ल)²⁴त्वङ्मलवहा ²⁵महानाडी प्रभामति(ती) । मस्तकपृष्ठे अर्बुदविकटदंष्ट्रि(ष्ट्री) मांसवहा बलानाडी महानासा । इति ²⁶पीठप्रमुदिता²⁷भूमिपोठदानदुःखज्ञानम् ।

1. शुष्कं-च. । 2. खड्ख-ड.च. । 3. लितः-क. आलिज-छ. । 4. चन्द्रम्भाव-क ग., 'चन्द्रफलभवैः' नास्ति-ज. झ. ब. । 5. 'कालि' नास्ति-क. ग. च. ज. । 6. प्रत्यङ्ग-ब. । 7. शुचिशु-क. ख. ग. घ. । 8. वज्रवज्रवा-ड. । 9. इत्यनो कथ-क. ड. ज. । 10. चतुरस्रं-क. ख. ग. घ. ड. च. ज. । 11. डिकां-ख. ग. ड. छ. । 12. चतुर्भुजा-ड. च. । 13. दें-ड. च. ज. । 14. भौं-ड.च., जां-ख घ., ऊं-ज. ब. । 15. कां-ख.घ., कां-ड.च.छ.झ. । 16. 'कां कां' इति विपर्यस्तः पाठः-छ. । 17. लं-ड. । 18. प्रें-ड. ज. ब. । 19. सौं-ड. च. ज. झ. ब. । 20. सूं-ख. च. । 21. मुं-ड., मूं-च. । 22. कुं-ड. । 23. पाल-ड. । 24. त्वगाल-क. ख. ग. घ. ड. च. ज. । 25. मला-छ. । 26. 'पीठ' नास्ति-घ. । 27. 'भूमिपीठ' नास्ति-क. ख. ग. ड. छ. ज. झ. बं. ।

गोदावरीवामकर्णे ¹स्वरवैरिणस्नायुवहा रजानाडी वि(वी)रमती, रामेश्वर-
भ्रूमध्ये अमिताभा अस्थिवहा ²पटानाडी खर्वरी । देवीकोटचक्षुर्द्वये वज्रप्रभा वुक्कवहा
भगानाडी लङ्केश्वरी, ता(मा)लवस्कन्धद्वयो³र्वज्रदेह⁴हृदयवहा ⁵चोद्धतानाडी द्रुमच्छाया ।
इत्युपपीठविमलाभूमि⁶ शीलसमुदयज्ञानम्⁷ । चित्तचक्रं धर्मं हूँ खर्वरी स्वर्गालयः ।

कामरूपकक्षद्वयं अङ्कुरिकः⁸ अक्षिवहा महानाडी ऐरावती । ओङ्गे स्तनयुगले
वज्रजटिले⁹ पित्तवहा महानाडी महाभैरवी । इति क्षेत्रं प्रभाकरी¹⁰क्षान्तिनिरोधज्ञानम् ।

¹¹त्रिशकुनिनाभौ महावीरफुफ्फुसवहा प्रभानाडी वायुवेगा । कोशले नासि-
काग्रे वज्रहंकार-अन्त्रमालावहा ¹²हलानाडी सुराभक्षी । इति उपक्षेत्रम् अर्चिष्मती-
¹³भूमिवीर्यमार्गज्ञानम् ।

कलिङ्गे मुखे ¹⁴सुभद्रगुणवर्तिवहा महानाडी श्यामादेवी । लम्पाककण्ठे वज्र-
भद्रा¹⁵ बलवहा¹⁶ सौख्यदा नाडी सुभद्रा । इति छन्दोह-अभिमुखीभूमि¹⁷ध्यानक्षय-¹⁸
ज्ञानम् ।

काञ्चिद्वय¹⁹(पायु) महाभैरवपुली(री)षवहा ²⁰घनानाडी हयकर्णा । हिमालये
मेढ्रे विरूपाक्षां(क्षा) सीमान्तवहा सितानाडी खगानना । इति उपछन्दोहसुदुर्जयाभूमि-
प्रज्ञाऽनुत्पाद²¹ज्ञानम् । इति वाक्चक्रम् । संभोग-आभूचरीमर्त्यभोगः ।

प्रेतपुर्यां लिङ्गे महाबला²² श्लेष्मवहा नाडी चक्रवेगा । गृहदेवतायां गुदे रत्न-
वज्रपूयवहा²³ नटीनाडी खण्डरोहा । इति मेलापकदूरङ्गमाभूम्युपायो धर्मज्ञानम् ।

सौराष्ट्रे ऊरुद्वयोर्हयग्रीवलोहितवहा स्फुटानाडी शौण्डिनी, सुवर्णद्वीपे
जङ्घायामाकाशगर्भं²⁴स्वेदवहा लतानाडी चक्रवर्मिणी । इति उपमेलापकम् अचलाभूमि-
प्रणिधानमद्वयं ज्ञानम् ।

नगल(र)पादाङ्गुलिषु श्रीहेरुकमेदोवहा बलानाडी सुवीरा । सिन्धौ पादपृष्ठे
पद्मनर्तेश्वर²⁵अश्रुवहा शठानाडी महाबला । इति श्मशानं साधुमतिभूमिबलसंवृत्तिज्ञानम् ।

1. सुरवै-ख. ग. ड. च. छ. ज. । 2. परा-च. । 3. 'द्वयो' नास्ति-ज. । 4. देहा-छ. ज. ।
5. छता-ज. । 6. इतः परं 'भूमि' पदं नास्ति-क. ख. ग. च. छ. ज. झ. ञ. । 7. स्थानम्-क. ग. घ. ।
8. रिक-छ. ज. । 9. युगलवज्रतिल-क. ग. जटिल-ज. । 10. प्रभास्था-क. ख. ग. ज., प्रभास्य-च. ।
11. त्रिशकुली-क. ग. ज. ञ. । 12. हल-क. ग. ज., लतानाडी-च. । 13. 'भूमि' नास्ति-
क. ख. ग. च. छ. ज. । 14. सुभद्रा-घ., द्रे-च. । 15. वज्रप्रभा-घ. । 16. दलवहा-ख. ड. च. छ. झ.,
उदरवहा-घ. । 17. 'भूमि' नास्ति-क. ख. ग. च. छ. ज. । 18. ध्यानकरं-क. । 19. काञ्चित्रिय-क. ग.,
हृदय-घ. झ. ञ., घ्रिय-ज. । 20. तना-क. ग. ज. । 21. अनुत्पन्न-च. । 22. महाचण्डास्यवहा-
क. ग. । 23. पूयमहामती-क. ग. । 24. शसंगर्भस्वेत-छ. । 25. नृत्येश्वर-क. ग. ज. झ. ।

मरौ¹ अङ्गुष्ठयोर्वैरोचनश्चेत²वहा गणानाडी चक्रवर्तिनी । ³कुलतायां जानु-
द्वयं(ये) वज्रसत्त्वबालसिंघा⁴वहा समानाडी महावीर्या । इति उपशमशानधर्ममेघा⁵ज्ञान-
परचित्तज्ञानम् । इति काय⁶चक्रनिर्माणम् । ॐ पातालवासिनि पातालमधिकारः ।

एतेषां दशपीठ-दशभूमि-दशपारमितास्वभावम् । मुखपूर्वद्वारे उग्रानाडी काकास्या,
दक्षिणनासा-उत्तरद्वारे घोराणाडी उलूकास्या, गुदे पश्चिमद्वारे अग्निवदनानाडी
श्वानास्या, वामनासादक्षिणद्वारे तेजिनीनाडी शूकरास्या, वामकर्णे आग्नेये खड्गधारी
नाडी यमदाती⁷, दक्षिणकर्णे नैऋत्ये चक्रीनाडी यमदूती, दक्षिणनेत्रे वायव्ये ⁸सूची-
मुखानाडी यमदंष्ट्री, वामनेत्रे ऐशाने स्वभावकुक्षिनाडी यममथनी ।

अत्र केचिदेवं वदन्ति—वामपादस्याग्रे उत्तरं गुल्फपाष्णिदक्षिणगुल्फेषु⁹ स्थिता
या¹⁰ द्वारपालिन्यः, दक्षिणपादस्याग्रे दक्षिणगुल्फपाष्णिवामगुल्फेषु स्थिताः कोणवा-
सिन्या(न्यो) योगिन्या(न्यः) इति ।

एवमध्यात्ममाराध्य मण्डलं भावयेत् । यदि वाराहीमूलं विश्ववज्रतन्मध्य-¹¹
विश्वपङ्केरूह¹²मन्त्र(न्त)श्चतुर्दलं बहिरष्टदलं बिन्दुरूपं¹³ विभाव्य तन्मध्यगां निरालम्बां
यावद् ¹⁴नाडीत्रयैकरूपां¹⁵ प्रभास्वरां¹⁶ नालरूपां¹⁷ वज्रवाराहीं भावयेत् । तत्र
त्रिदल(ले) बिन्दुरूपास्तिस्रस्तिस्रः शशाद्या नाडिका¹⁸ डाकिन्यादिडाकिनीस्वभावा¹⁹
विभाव्य नाडीचक्रान्तर्वर्तिव्यापकं महाज्ञानं ²⁰श्रीचक्रसंवरं यावदित्थं(च्छं) चिन्तयेत् ।
ततः ²¹स्फूलयोगेन वाराहीमुत्थाप्य सुखस्थाने²² सर्वतथागतान्श्रोदयेत् । चोदितै-
रमृतीभूतैर्यथोक्तमण्डलं सेवयेत् । ततोऽभिमुखीकृत्य अमृतरूपपरममन्त्रमावर्तयेत् । सैव
पूजा, सैव स्मृतिः, स एवामृतास्वाद इति ।

इति²³ ज्ञानोदय(ये) नाडीचक्रात्मकपरमगम्भोरो²⁴त्पन्नक्रमः

-
1. मस्त-क. ख. ग. ज. झ. ञ. । 2. खेट-ख.ड.छ.ज.झ.ञ., विड्-घ. । 3. कुलजा-क., कुलताजा-
ख.ग. । 4. बालसिंही-च. । 5. मेघा-ज. । 6. कायक्रम-झ.ञ. । 7. दाढी-ज. । 8. शुचिमु-क. छ.ज.ञ. ।
9. गुल्फे प्रस्थितात्-क. ग. । 10. प्राद्वारपाणिन्या-क. ख. ग. ज. ञ., प्रावारपाणिन्या-घ. ड. च,
न्याद्वार-झ. । 11. मध्ये-ड. च. । 12. सहे-ड. च. । 13. 'बिन्दुरूपं' नास्ति-क. ख.
ग. घ. छ. ज. झ. ञ. । 14. हृदयैक-घ. । 15. रूपात्-क. ग. ज. । 16. स्वरात्-क. ग. ज. ।
17. नाड्यरूपात्-क. ख. ग. घ. ड. च., नाडीरूपात्-झ. । 18. नाडी-च. छ. ड. ञ. ।
19. भावं-क. ख. ग. घ. । 20. श्रीमहाचक्र-छ., श्रीचक्रसंवरसंवरं-झ. ञ. । 21. स्फुलन
-क. ग. ज. झ., स्फुरण-ड., स्फुलन-ञ. । 22. स्थानेन-घ., स्थान्-ड. । 23. तत्त्वज्ञानो-छ. ।
24. गम्भीरो-च. ।

जिह्वां तालुगतां कृत्वा योगी योगपरो भवेत् ।
 योगजं ¹स्फारयेद् बुद्धं सर्वाशाकाशवस्तुषु ॥ 3 ॥
 सिद्धयते जन्मनीहैव मन्दपुण्योऽपि मानवः ।
 गुरुपादप्रसादेन योगाभ्यासात्सेन(भ्यासवशेन) च ॥ 4 ॥

तथा ²चोक्तम्—

वीरस्य वीर³जिह्वायां जिह्वा ताल्वन्तरे पुनः ।
 तालुदेशे तु वीरेशः कृत्वा ध्यानपरो भवेत् ॥
 षण्मासात् सिद्धयते ज्ञानं चिन्तामणिरिवापरम् ॥ 5 ॥ इत्यादि ।

अथा⁴परयोग उच्यते—झटित्यात्मानं श्रीहेरुकं विभाव्य नाभिहृत्कण्ठशीर्षेषु
 चत्वारि चक्रं(क्राणि) चिन्तयेत् । तत्र नाभिमूले चतुःषष्टिदलं⁵ विशुद्ध्या चतुर्देवीनां षोडश-
 शून्यतादिस्वभावषोडशाब्दविशुद्ध्या वा चतुःषष्टिदलं त्रिकोणं विचित्रं निर्माणचक्रं दलेष्व-
 नुरो(लो)मतः ककारादीनि द्वात्रिंशद्वचञ्जनानि विलोमतस्तानि द्वात्रिंशद्वचञ्जनान्येव च⁶
 मध्ये अंकारं प्रभास्वरं भावयेत् । हृदये⁷ अष्ट⁸दलं चतुरस्रं कृष्टं⁹ धर्मचक्रं तस्य दिग्लेषु
 ॐ¹⁰ हूं त्रां ह्रीं खं तद्विदिग्दलेषु लां मां पां तां तदूर्ध्वतो अ क च ट त प य ¹¹शं सा(शा)-
 न्तभूतभौतिकरूपं मध्ये¹² हूँकारं भावयेत् । कण्ठे षोडशशून्यताविशुद्ध्या वा¹³ षोडशमर्ध-
 चन्द्राभं रक्तं संभोगचक्रम् । तस्य दलेषु षोडशस्वरा मध्ये ¹⁴वंकारं भावयेत् । शिरसि
 द्वात्रिंशन्नाडीविशुद्ध्या द्वात्रिंशत्पुरुषलक्षणविशुद्ध्या द्वात्रिंशदलं¹⁵ वर्तुलं शुक्लं महासुख-
 चक्रम् । तस्य दलेषु ककारादिद्वात्रिंशद्वचञ्जनानि तदुपरि षोडशस्वराननुलोमतो मध्ये
¹⁶हूँकारमनाहतश्रवं¹⁷ चित्तधरं¹⁸ विभावयेत् ।

¹⁹अथवाऽऽहुः—ऊर्ध्वचक्रमधश्चक्रं त्रिकोणं²⁰ मध्ये चक्रद्वये ²¹हूँकारमिति ।

1. स्फुर-क. ग. ज. न. । 2. प्रो-क. ग. । 3. वीरं-ज. । 4. अथ प-ग., परो-घ. । 5. दण्ड-
 क. ख. ग. घ. च. ज. झ. न., दण्डविशुद्ध्याश्च-ड, शुद्ध्याश्च-च. । 6. 'च' नास्ति-छ. ज. झ. न. । 7. 'हृदयेऽष्टपते-
 (त्र)विशुद्ध्या आर्याष्टाङ्गमार्गविशुद्ध्या अष्टौ विमोक्षविशुद्ध्या' इत्यधिकः पाठः-झ. । 8. मण्डलं-छ. ।
 9. कृष्ट्या-क., कृष्णा-ग. ज. झ., ण्यं-ड. च. छ. । 10. 'हूं' नास्ति-क. ख. ग. घ. ड. ज. झ. ।
 11. शः-च. न., सं-ज. । 12. मध्यहं-क. ख. ग. झ. । 13. 'षोडशान्यप्रज्ञासंभोगविशुद्ध्या
 षोडशकान्तिविशुद्ध्या' इत्यधिकः पाठः-झ., 'वा' नास्ति-ज. न. । 14. उंकारं-झ. भ. । 15. चतुर्दलं-
 ड. च. । 16. हंकार-क. ख. ग. घ. ज. न. । 17. श्रवचि-ग. घ. ड. ज. न. । 18. धारं-
 ख. ग. घ. ड. ज. झ. । 19. अथ त्वा-ख. घ. ड. च. । 20. त्रिकोणमध्य-च., विकारं-क. ग. ।
 21. हंकार-ख. घ. च. ज., हूँकार-ज. ।

¹ततस्तेषु चतुर्षु चक्रेषु चतू²(तुश्)चतूरूपान् यथाक्रमं विभाव्य विचित्र-विपाक-विमर्दविल-क्षण-आनन्द-परमानन्द-विरमानन्द-सहजानन्द-दुःख-समुदय-निरोध-मार्ग³-आत्मतत्त्व-मन्त्रतत्त्व-देवतातत्त्व-ज्ञानतत्त्व-स्थावर-सर्वास्ति-संवित्ति⁴-महासंधी-निष्पन्न-विपाक-पुरुषकार-वैमल्यानि-त्वरित-बाष्प-विवर्च-विश्वस्थात्⁵-आचार्य-भिक्षु-श्रावणैरक⁶-चैरक⁷-परपीठ-आत्मपीठ-योगपीठ-तत्त्वपीठ-एकार-वङ्कार-मकार-यकार-लोचना-मामकी-पाण्डरा-तारा-कर्ममुद्रा-धर्ममुद्रा-ज्ञानमुद्रा-महामुद्रा-शून्यता-निर्मिता⁸-प्रणि-हिता-अनभिस्कारा⁹-गंगा-सागर-प्रयाग-कुरुक्षेत्र-गया-वाराणसी-जगन्नाथ-काशी-कृत-त्रेता-द्वापर-कलि-पूर्वाह्ण-मध्याह्ण-अपराह्ण-अर्धरात्रान्, शरत्-शिशिर-ग्रीष्म-वर्षा ओडियान-जालन्धर-देवीकोट-पुल्लिरान्, वात-पित्त-श्लेष्म-सन्निपातान्, सेवा-उपसाधन-रो(सा)धन-महासाधन-पृथ्वी-आप-तेज-वायु-मैत्री-करुणा-मुदिता-उपेक्षा-मृदुयोग-अनु-योग-नियोग-महायोग-पूर्वविदेह-जम्बूद्वीप-अपरगोदावरि-उत्तरकुरु-चतुःसागरस्वभाव-¹⁰शुभ्रवर्ण-पीतवर्ण-रक्तवर्ण-हरितवर्ण-अकार-आकार-हूँकार-फट्कार-प्रज्ञा¹¹-उपाय-कालि-आलि-धर्म-संभोग-निर्माण-महासुख-यङ्कार-रङ्कार-लङ्कार-वङ्कार-ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य-शूद्र-चन्द्र-सूर्य-तारा-राहु-पाताल-पृथ्वी-आकाश-स्वर्गाश्च क्रमेणाधिमुञ्चेत् ।

एवं बुद्धकायं चतुष्टयस्वभावं चतुश्चक्रं विभाव्य चक्रस्थबीजा¹²क्षरैर्मरीचि-मुखेभ्यः सर्वतथागतान् ¹³सर्वबोधिसत्त्वान् वीरयोगिनीमण्डलाकारेण संस्फार्य तान् विहितजगदर्थान् गृहीताखिलजिन¹⁴मतांस्तेष्वेव संहृत्य चक्रचतुष्टयं यावदित्थं(च्छं) भाव-येत् । तदिदं ¹⁵भावरत्नं चिरकालं भावयेत् । कायचतुष्टयं(य)लाभो इहैव जन्मनि संपद्येत¹⁶ ।

इति ज्ञानोदये¹⁷चतुश्चक्रभावनायोगः

अथ नाडीत्रययोग उच्यते ।

कण्ठादारभ्य वामेना(न) प्रवृत्ताऽधोमुखी नाभिमण्डलगता मूत्रवहाऽऽलिव्याप्ता नाभेरारभ्य सव्येन प्रवृत्तोद्ध्वं(ध्वं)मुखी कण्ठपर्यन्तगता रक्तवहा कालिव्याप्ता ।

1. तत्र-ङ. । 2. 'चतू' नास्ति-क. ग. घ. । 3. मार्गान्-ग. घ. ङ. च. । 4. संवृति-ब. । 5. स्फात्-क. ग., स्थाने-च. । 6. मैरक-क. ग. घ. झ. । 7. नेरक-घ. च. । 8. निमित्ता-ङ. । 9. नाभिरका-ग., नाभिसंस्था-घ. । 10. श्वेत-च. । 11. उपायप्रज्ञा-ख. ग. च. । 12. बीजा-क. ग. । 13. सर्वबोधि-क. ग. ज. झ. ब., संबोधि-च. छ. । 14. जिनज्ञानमतां-क. ख. ग. घ. ङ. च. ज. झ. । 15. सादरं निरन्तरं-ख. घ. छ. ज. ब., सारदं-झ. । 16. द्यते-ब. । 17. 'चतुश्' नास्ति-च. ।

तेन¹ प्रज्ञोपाय-शून्यताकरुणा-चन्द्रसूर्यं-आलिकालि-प्रवेशनिष्काश-दिनरात्रि-व(अ)
स्तमनोदय-उत्तरायणदक्षिणायां(यन)-संभोगनिर्माण-स्वप्नप्रबोध-परमार्थसंवृति-सूक्ष्म-
स्थूल-वेकारवंकार-कंकारअंकार-भावाभाव-ज्ञेयज्ञानौ(न)-ग्राह्यग्राहकौ(क)-ल(र)स-
नाललना-इंगलापिंगला-एवमूनविंशत्याकारमधिमुञ्चेत् ।

मध्यमा तु नाडिका द्वयद्वयैकरूपाऽधोमुखी बोधिचित्तवहा कदलीपुष्पसन्निभा
लम्बमाना तैलवह्निरिवादी(बोद्दी)सा धर्मकाय²वाक्चित्तैकरूपा सहजानन्ददायिका ।
एता एव तिस्रो नाडिकाः(ः) । कुह सन्धिर्भवेत्(?) एकीभावः । योनिनाड्यो भवन्ति । ताः
पुनस्त्रि³भवपरिणता ग्राह्यग्राहकवर्जिता महासुखकायात्मिका[ः] ⁴‘शून्यताकरुणाभिन्नं(न्न)-
बोधिचित्तस्वभावा इत्यधिमुञ्चेत् ।

तद्गतैकमानसो⁵ मन्त्री यावदिच्छं तिष्ठेत्⁶ । नियतं प्रज्ञोपायाद्वयसिद्धिः(द्धीः)
संपश्येत⁷ ।

इति ज्ञानोदये नाडीत्रयभावनायोगः

अथ सहजप्रज्ञायोग उच्यते—

निर्माणचक्रमध्यस्था प्रज्ञावर्णाग्ररूपिणी ।

कर्ममारुतनिर्धूता ज्वलन्ती सहजात्मिका ॥ ६ ॥

विद्यु⁸च्छता(त)प्रतीकाशा सुसूक्ष्मा बिसतन्तुवत् ।

⁹विभाव्योत्थापयेन्मन्त्री सद्गुरु(रोरु)पदेशतः¹⁰ ॥ ७ ॥

ततस्तान् धर्मसंभोगचक्रमा(गां)स्तथागतान् सबोधिसत्त्वगणान् दग्ध्वा निष्काश-
मार्गेण निष्क्रम्य उपायं त्रि[ः] प्रदक्षिणीकृत्य ऊर्णाकोशान्(कोश)गतान् भावयेत् । ततो
मर्मोद्घाटकद्वारेण निःसृत्य दशदिग्गतानां बुद्धबोधिसत्त्वानां प्रवेशमार्गेण प्रविश्य जाल-
न्धरगतांश्चक्रस्थान् ससुतान् सर्वसुगतान् दग्ध्वा गृहीतं तत्पीयूषरसं शिखारन्ध्रेण निर्गत्य
स्वप्रवेशमार्गेण प्रविश्य दग्धांस्तथागतादि(तांस्त्रिः) प्रदक्षिणीकृत्य ओडियानेन निर्गत्य
जालन्धरेण प्रविष्टांश्चिन्तयेत् । तत्र तत्र श्रवन्ती क्षीरधारा वहन्तः(न्ती) सीमान्तरगता[न्]

1. ते पुनः—क. ख. ग. घ. ङ. च. झ. । 2. वाग्भिर्नैक—क. ङ., बोधिचित्तैक—च. । 3. विभव—क.ङ.,
परिरता—क. ग. ङ. । 4. ‘शून्यता’ नास्ति—क. ख. ग. ङ. ज. । 5. मानसामग्री—क. ङ. । 6. तिष्ठतु—ग.,
इष्टतु—क. ङ. । 7. संपश्यते—ख. घ. ङ. ज. ब. । 8. विशुद्धता—क. ङ. । 9. विविच्योत्था—क. ग.ङ. ।
10. देशक—ज. झ. ब. ।

दग्धा[न्] तथागतांस्तोषयन्ती¹ पुनरपि निर्माणचक्रे स्थितान् पश्येत् । एवमरहत(ट्ट)-
घटिकावच्चित्तविश्रामपूर्वकं पुनः पुनर्भाविष्येत् । एवम²भ्यस्यते(तोऽ)चिरादेव महामुद्रा³-
सिद्धिरभिमुखी भविष्यति ।

इति ज्ञानोदये सहजप्रज्ञायोगमि(ग इ)ति

⁴अथापरयोगः कथ्यते ।

निर्माणचक्रमध्यस्थां ज्वलन्तीमालीं(लिं) संक्षेपरूपां तिलकाख्यां प्रज्ञामुत्पत्य
धर्मचक्रगतेन कालिसंक्षिप्तरूपेण श्रवदमृतधारेण वसन्ताख्येनोपायेन सहजसमापन्नामनु-
रक्तामा स(सं)क्षोभ्य सानन्दा(न्दां) भावयेत् । तत्र स्फरणयोगेन व्याप्ताशेषाकाशभावं
तामधिमुञ्चेत् ।

इति ज्ञानोदये वसन्ततिलकयोगः

⁵एषामन्यतमो योगः कर्तव्यः सिद्धिमिच्छता ।
तत्राक्षसूत्रेण नियमो जपो ध्यानं तथाचनम् ॥ ८ ॥
न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासो न चाहुतिः ।
न च धर्मसमादाय[ः] प्रतिमावन्दना न च ॥ ९ ॥
न पूजा [न] परं ध्यानं न मण्डलं तथाचनम् ।
स एव नियमः⁶पीठे वन्दना सैव योगिनः ॥ १० ॥
सिद्धौ⁷ च वसुधादीनां लय[ः] ⁸स्याद(द्व)शर्वति ते⁹ ।
ज्ञानमात्रं ¹⁰सदा तिष्ठेद् ¹¹भासुरो गगनोपमः ॥ ११ ॥
निमित्तसिद्धिं जानीयान्निमित्तानि¹² तु पञ्चधा ।
अतः संलक्ष्य(क्ष)येत्¹³तानि योगि(गी) धारणचेतसा ॥ १२ ॥
प्रथमं मरीचिकाकारं धूमाकारं द्वितीयकम् ।
तृतीयं खद्योताकारं चतुर्थं दीपवज्ज्वलेत् ॥
पञ्चमं तु सदा लोकं निरभ्रं गगणसन्निभम् ॥ १३ ॥

इति पञ्चाकारमिति ।

1. यन्ति-ज. । 2. मत्यास्यते-क. ख. ग. घ. ङ. छ. झ., मुत्पश्यते-च. । 3. समुद्रा-ख. घ. च. ।
4. 'अथ' नास्ति-ख. छ. ज., अथ पर-ग. ज. झ., अपरो-च. । 5. यथा मन्यते मायागः-क. ग. घ. ङ. ।
6. मोक्षोत्थं-क. घ. ङ. । 7. सिन्धौ-क. घ. ङ. । 8. स्मा-ग. । 9. मे-ज. झ. । 10. तदा-च. छ.
ज. झ. व. । 11. दास्तरो-क. घ. ङ., हास्त-ग. । 12. तहानि-क. ङ. ज. । 13. लक्षताज्ञानि-
क. ग. ङ. ज. ।

एवमभ्यस्यतः¹ सम्यग् योगिनो योगसंभवात्² ।
महामुद्राह्वया³ सिद्धिर्जायते नात्र संशयः ॥ 14 ॥
किं पुनः सिद्धयः क्षुद्राः⁴ खड्गवेतालकादयः ।
अणिमादिगुणाश्चापि महाभिज्ञादयस्तथा ॥ 15 ॥

समाप्तोऽयं समुत्पन्नक्रमयोगः

शुक्ला याऽस्ति अथ कृष्णा दशम्यां कृतमण्डला(लः) ।
वीरवीरेश्वरीपूजां विदध्याद् विधिवत् सदा ॥ 16 ॥
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां शुक्लपक्षे च साधकः ।
संपूज्य वीरयोगिन्या(न्यो) विधिना मदनैर्बलैः ॥ 17 ॥
एवं संपूजिताः स्तोत्रं(त्रैः) पुष्टिमि(मृ)च्छन्ति सर्वथा ।
तुष्टाः सिद्धिं⁴ प्रयच्छन्ति तस्मात्पूजा(ज्याः)सदैव ताः ॥ 18 ॥
वामोद्गतं⁵ यत्र जगत् सर्वं स्थावरजङ्गमम् ।
अतः सर्वाणि कर्माणि कुर्याद् वामेन पाणिना ॥ 19 ॥
वामोच्चारो⁶ भवेद् योगी वामसर्वार्थसाधनः ।
वामजापकरो नित्यं सर्वोपद्रवनाशनम् ॥ 20 ॥
इति सञ्चिन्त्य योगोन्द्रः सर्वशङ्काविर्वर्जितः ।
सिंहवद् विचरेत् स्त्रीभिः सदा योगेन तत्परः ॥ 21 ॥
पञ्चस्वपि च वर्णेषु विचरेदेकवर्णवत् ।
निर्विकल्पात्मको भूत्वा भुञ्जयेत् कामपञ्चकम् ॥ 22 ॥
योगिनीभिश्च्युतो योगी नीयते परमं पदम् ।
पूजाभिर्बाह्यगुह्याभिः संपूज्या(ज्य) च विधानतः ॥ 23 ॥
कृत्वाऽसौ संवरस्य त्रिभवभवस्वभोः⁹ साधनं संवराग्रं
यन्मे पुण्यं प्रसूति(तं) विध(धु)करविमर(लं)¹⁰ दोषविध्वंसदक्षम्¹¹ ।
तेनास्य सर्वसत्त्वास्त्रिभवभयहरश्रीसुखस्फीतगात्रा
वीराः श्रीहेरुकाद्या निजयुवतियुता आत्मगोत्रानुरूपाः ॥ 24 ॥

इति ज्ञानोदये प्रज्ञोपाययोगः

1. मत्स्यस्यते-क. 2. संभवेत्-घ. 3. द्वांकया-क.ग.ङ.झ. 4. ऋद्धि-क.ख. 5. गता-क.ख.ग.घ. उ. ज. 6. वामचारो-ज.झ.ज. 7. नित्यं-छ.ज., त्रिभिः-झ. 8. वार्यगुह्या-क, वार्यगुह्या-ग. 9. भवे-क.ख.ग.ङ.च.छ.ज. 10. विसरं-च. 11. विद्युत्सुदक्षं-ख. घ. उ. च. छ., सदक्षं-क. ग. ।

अथ षट्चक्रविशुद्धिमाह—

शिखास्थाने ललाटे च कण्ठे हृदयनाभितः ।

लिङ्गेषु त्रिदलं पद्मं चतुःषष्ट्यष्टोडशम् ॥ 25 ॥

द्वात्रिंशं¹ चतुर्दलं चैव बोधिबीजेन² शोभितम् ।

व्यञ्जनं च स्वरं तेषां मातृकास्वरव्यञ्जनम् ॥ 26 ॥

³त्रये दले रं च ह्रींकारं वज्रयोगिनी वंकारं हूँकारं हेरुं ध्यात्वा षट्चक्रं परिकीर्तितम् । षट्चक्रः षट्पटाकारमधिमुञ्चेत् । तद्यथा—

वज्रसत्त्वः, अक्षोभ्यः, अमोघसिद्धिः, वैरोचनः, रत्नसंभवः, अमिताभश्चेति षट्जिन⁴स्वभावम् । सर्वस्कन्ध-विज्ञानस्कन्ध-संसारस्कन्ध⁵-रूपस्कन्ध-वेदनास्कन्ध-संज्ञानस्कन्ध⁶ इति षट्⁷स्कन्धाकारः (रम्) । ⁸विज्ञानधातु-आकाशधातु-वायुधातु-पृथ्वीधातु-तेजोधातु-तोयधातु इति षट्धातुस्वभावम् । मनः-श्रोत्र-घ्राण-काय-चक्षुर्जिह्वा षडिन्द्रिय-स्वभावम् । शब्द-धर्मधातु-स्पर्श-गन्ध-रस-रूप इति षड्रसः । धर्मधात्वोश्वरी⁹-स्पर्श-वज्री-तारा¹¹-लोचना-मामकी-पाण्डरा षट् तारा¹² चेति । हेर-नील-मल्प-मुक्ति-कर्केतन-पद्मराग षड्धातुः । इदं ब्रह्माण्डसदृशाकारं ब्रह्मभुवनं गुह्यचक्रं धर्मोदयाकारम् ।

धर्मोदयामहोद्याने नानाकुसुमविराजिते ।

शुक्लरक्तादिपुष्पेण फलप्रसवमण्डितम्¹³ ॥

¹⁴महाधर्मव्याख्यानस्थाने¹⁵ ¹⁶प्रसवभूमिसम्पदम् ॥ 27 ॥

अथ नाडीत्रयभावना—

ललना प्रज्ञास्वभावेन रसनोपायसंस्थिता ।

अवधूती मध्यदेशे तु ग्राह्यग्राहकवर्जिता ॥ 28 ॥

कदलीपुष्पसंकाशं(शा) लम्बमाना त्वधोमुखं(खी) ।

तैलवह्निरिवोद्दीप्ता बोधिचित्तसमावहा ॥ 29 ॥

सावधूती स(सु)विज्ञाय(ता) सहजानन्ददायिका ।

प्रधाना¹⁷ सर्वनाडीनां ललनाद्यास्तु नाडिकाः ॥ 30 ॥

1. शच्चतुर्दले-क.ख.ड.छ.ज. । 2. वीर्येण-ड. । 3. त्रयदलरंचनयो-क., त्रयं दं लं रं च ह्रींकारयो-ड. ज., त्रयदलं च ह्रींकारं वज्रयो-घ. च. । 4. चक्रमध्यपकार-क., चक्रं-ड., षड्पटाकार-ग. घ. ज. । 5. जित-क. । 6. 'स्कन्ध' नास्ति-च. । 7. संज्ञास्कं-च.छ. । 8. षट्चक्रस्कन्धा-च. । 9. ज्ञान-ज.झ. । 10. धात्वे-ज.झ. । 11. वती-क. । 12. तारादेवी-च. । 13. ते-क.ख.ग.घ.ड.च. । 14. सद्धर्म-च. । 15. स्थानेन-क. ख.ग.घ.ड.च.छ. । 16. प्रशस्त-ज.ग. । 17. प्राधान्य-झ. ।

अत एवा¹श्रयामन्या गङ्गासिन्धुपरापगाः² ।
 ता एव³योनिनाड्या(ड्यः) स्युरेकी⁴भूताः खगानना ॥ 31 ॥
 संभोगकायरूपात्मा जानीयाद् देहमाश्रिताः ।
 तिस्रस्त्रिया⁵(स्त्विमाः) प्रधाना या ललनाद्यास्तु नाडिकाः ॥ 32 ॥
 ललना संभोगिकायो ल(र)सना निर्माणिकी तनुः⁶ ।
 अवधूती धर्मकाय[ः] स्यादिति कायत्रयो मतः ॥ 33 ॥
 एता नाडिकाः सर्वाः शरीरशुभकारिणी ।
 तस्याः समूहसंजाता(तं) पिण्डेन देवतात्मकाः ॥ 34 ॥
 पिण्डातीतं भवेत् पिण्डं पिण्डातीतं च देवता ।
 तस्मादचित्तयोगेन तथतामयसर्वगा ॥ 35 ॥
 प्रवेशाद्⁷ वै भवेत्सृष्टि[ः] स्थिति[ः] निश्चलरूपतः ।
 विनाशो निर्गतो वायुर्यावज्जीवं प्रवर्तते ॥ 36 ॥
 प्रत्यक्षं⁸ भावयेत् स्वाङ्गे तिष्ठति⁹ चक्र उष्णीषे ।
 कर्मनित्यक्रमे चैव ललाटे विधि भावयेत् ॥ 37 ॥
 खाद्यभोज्यं तथा पिबेत्¹⁰ कण्ठचक्रं विभावयेत् ।
 सम्पूर्णं खादयेत् पश्चाद् हृच्चक्रे सुखं तिष्ठति ॥ 38 ॥
 मध्याह्ने भावयेद्योगं¹¹ नाभ्यक्ता क्रम भावयेत् ।
 सन्ध्यान्ते गुह्यचक्रे तु प्रज्ञोपायसुखं भवेत् ॥ 39 ॥
 येन येनैव भावेन फुल्लितः सर्वहेतुना ।
 तेन तेनैव¹² योगेन साधकी¹³ सिद्धि¹⁴ मुक्तिदम् ॥ 40 ॥
 वर्षं च बह्वतिक्रान्तं¹⁵ मूधंमूर्द्धगतं भवेत् ।
 निर्वाणा¹⁶कारं जानीयाद्विनिर्गत्पुष्टिशो¹⁷षयोः ॥ 41 ॥

1. वश्या-क. ग. ज. झ. न. । 2. परोपया-ख. ड. च., परायणा-घ. । 3. योगिनीनाड्या-क. ड. ज. न., योगिन्याद्याः-घ. । 4. स्युरेकीतिताः-क. ग. ज. । 5. त्रिमास्त्रिमा-क. ग. ड. । 6. ततः-ख. घ. ड. च. । 7. शार्द्ध-क. ग. ज. । 8. प्रत्येकं-क. ग., प्रत्यक्ष-ख. घ. च छ । 9. भोष्टानि-क. ज. । 10. घण्ट-ड. च, चक्रे-झ. । 11. नानेका-क. ग., नोत्यक्ता-ड. च., नाड्या-ज, नात्यक्षा-झ. । 12. तेन च-क. ख. । 13. की-क. ख. ग. घ. ड. च. । 14. मुक्तिसिद्धि-घ. ड. च. । 15. मुद्रमूर्ध-क. ज. । 16. णकालं-च. । 17. त्यष्टिषो ययोः-क. ख. न, ययौ-घ. ज., पुष्टिपोषयोः-च. ।

कुतो ध्यायान्मृत्युकाले धर्मचक्रे स्वयंभुवः¹ ।
 स(त)एव भावमात्रेण गच्छन्ति च सुखावतीम् ॥ 42 ॥
 हृदया²ब्जगतं वायुः(युं) शीतहूँकारसन्निभम् ।
 ध्यायात् समाहितो योऽसौ भवेन्निर्वाणकारकः ॥ 43 ॥
 संसार ऊर्ध्वगो वायुर्निर्वाणं स्यादधोगतम्(तः) ।
 अप्रतिष्ठितनिर्वाण(णं) हृदयाम्भोरुहस्थिता(तः) ॥ 44 ॥
³चक्रैः षड् ज्ञायते धीमान्⁴ गुह्यचक्रं विनिर्गतम् ।
 स एवंभूतजातीयान्⁵ मलमूत्रेषु ⁶ज्वालयेत् ॥ 45 ॥
 सैव निर्माणकं ज्ञेयं शरीरे नालके जले ।
 धर्मचक्रं शुभकुले नोयते सुखात्मकः(कम्) ॥ 46 ॥
 नारके अवीचिकण्ठे ललाटे देवशासने ।
 उष्णीषं साधकं ध्यात्वा⁷ गच्छन्ति अधिमुक्तिके⁸ ॥ 47 ॥
 इदं पश्यथ भूतानां धर्मकर्म कुरु क्षणम् ।
 संयोगं⁹ पवनं भेदं¹⁰ सदृशी(शो) नास्ति कस्यचित् ॥ 48 ॥
 द्रव्येषु काष्ठेषु च मृत्तिकासु शिलासु चित्तेषु न सन्ति देवाः ।
 सर्वेषु देवा मनसो विकारास्तस्मान्मनसाऽऽचरत्ये¹¹तदेवम् ॥ 49 ॥
 आत्मना सर्वबुद्धत्वं सर्वस्वं चित्तमेव च ।
 तस्मात् सर्वप्रयत्नेन आत्मानं पूजयेत् सदा ॥ 50 ॥
 न¹² वन्दयेद्धीमान् देवान् काष्ठपाषाणमृण्मयान् ।
 चित्तादेव भवन्तीति कल्पते भावहेतुना ॥ 51 ॥

इति ज्ञानोदये षट्चक्रविशुद्धियोगः

1. स्वयं भवेत्-क. ग. ज., भुवे-च. 2. हृदयाक्षि-क. ख. ग. घ. ङ., हृदयाक्रमणं-च. 3. चक्रे-
 क. ग. 4. ऽधिमानं-क. ख. ग. 5. जानीयात्-छ. ज. ङ., यान् नित्यमूल-च. 6. मेलयेत्-क.,
 जोलयेत्-ग. ड. ज. ङ. 7. ज्ञात्वा-क. ख. ग. घ. ङ. च. झ. 8. मुक्तिवै-क. ख. ग. घ. ड. च. झ. 9.
 योगे-च. 10. भेदे-च. 11. चरमेत-क. ख. ग. घ. छ. ज. ङ. 12. वन्देद्धी-ग. घ. ड. च. छ.
 ज. झ. ङ. 'न चापि वन्दयेद् देवान्' इत्यद्वयसिद्धि (15 श्लो०)-सुभाषितसंग्रह (पृ० 54)-
 स्थितः पाठः ।

अथ बाह्याध्यात्म¹पञ्चज्ञान²विशुद्धिमाह—

ततश्चतुर्दलकमलोपरि मध्ये श्रीवज्रवाराहीरूपं ³चूर्णकृतरक्तवर्षं(णं)⁴मद्यं पद्मभाजनं पश्येत् ।

- (1) पूर्वदले डाकिनीरूपं जलचरं आदिरक्तं मद्यं ⁵शुक्तिपात्रम् ।
- (2) दक्षिणदले रूपिणीरूपं वनचरं शुभ्रमद्यं नारिकेलपात्रम् ।
- (3) पश्चिमदले खण्डरोहारूपमाकाशचरं मार्जाल⁶कमद्यं कूर्मपात्रम् ।
- (4) उत्तरदले लामारूपं पृथ्वीचरमग्निमद्यं कांस⁷पात्रम् ।

एते(वं)रूपान् विभाव्य ततः कुण्डेन पातालं वरुणभुवं पात्रेण स्वर्गं त्रिभुवनं त्रिकायं त्रिरत्नं त्र्यक्षरं त्रियानं त्रिशरणं त्रिसन्ध्याः—इति त्रयरूपाख्यं विभाव्य कुण्डं पञ्च⁸सारं पञ्चाकारेण रूपमधिमुञ्चेत् । तद्यथा—प्रथमं गोकुदहनं पञ्चाङ्कुशमिति । चक्षुर्घ्राणश्चोत्रजिह्वामनःपञ्चेन्द्रियधातुम् । मध्यद्वीप-पूर्वविदेह-जम्बूद्वीप-अपरगोदावरी-उत्तरकुरु इति पञ्चद्वीपस्वभावम् । चक्रडाक-वज्रडाक-रत्नडाक-पद्मडाक-विश्वडाक इति पञ्चडाकजिनस्वभावो भवेत् । प्राणवायु-अपानवायु-समानवायु-उदानवायु-व्यानवायु इति पञ्चवायु-⁹रूपेति । ¹⁰पाचिनी-मारणी-आकर्षणी-पद्मनृत्येश्वरी-पद्मज्वालिनी¹¹ पञ्च-चक्र¹²रूपेति, पीठ-क्षेत्र-छन्दोह-मेलापक-श्मशान इति पञ्चपीठरूपम्¹³ । रूप्यधातु-शीशकधातु-सुवर्णधातु-ताम्रधातु-लोहधातु इति पञ्चधातुस्वभावम् । डोम्बि(म्बी)-शूद्री-क्षत्री-वैश्या-ब्राह्मी पञ्चजातीति, नर¹⁴वज्रधाते(त्वी)श्वरी-हस्तिलोचनी-गोमामकी-अश्व-पाण्डुरा¹⁵-श्वानतारा पञ्चदेवीसंभवेति¹⁶ । आकाश-आप-पृथ्वी-तेज-वायु पञ्चमण्डल-स्वभावेति । रूप-शब्द-गन्ध-रस-स्पर्श-स्वभावम् । आदर्शण-समता-प्रत्यवेक्षणा-कृत्यानु-ष्ठान-शु(सु)विशुद्धधर्मधातुज्ञानं पञ्चज्ञानमिति । ¹⁷श्रद्धा-वीर्य-स्मृति-समाधि-प्रज्ञा इति पञ्चेन्द्रियरूपं ततोऽभ्यन्तरे भावयेत्¹⁸ ।

-
1. ध्यात्मिकं-क. ख. ग. घ. ङ. च. ज. । 2. पञ्चसार-ड. ज. ञ., सालि-च. । 3. वर्ण-च. । 4. मयं-क. । 5. मुक्ति-क. ग. ज. ञ. । 6. रक्तमलं-च. । 7. कंवपा-क., कामपा-च., कंसपा-ज. । 8. सारेण-ज. ञ. । 9. 'इति' नास्ति-ञ., उत्पत्तिः-क., रूपम्-घ. । 10. पातनी-ड., वाचनी-च. । 11. ज्वाली-क. ख. ग. घ. च. ज. झ. । 12. उत्पत्तिः-क. च. । 13. रूपां-क. च. । 14. नरः-ख. घ. । 15. पाण्डरी-ड. छ. ज. । 16. संभोति-ग. घ., संभाति-ड. ज. ञ., समावेति-च. छ. । 17. शुद्धां-क. ख. ङ. झ. । 18. भावयन्-क. ।

दधिना बोधिचित्तरूपम्, ¹अम्रे(म्ले)न रक्तरूपम्, लवणेन पेयलरूपम्, तैलेन स्वेदरूपम्, चूर्णकृतमांसेन ब्राह्मण्यासारमांसरूपं विभाव्य पुनर्बोधिचित्तरूपेण कोषपानं रक्तेन जलचर⁸रूपम्, पेयलेन वनचररूपम्⁴, स्वेदेन आकाशचररूपम्⁵, ब्राह्मण्यासारमांसेन पृथ्वीचररूपम्⁶, एवंपूजां⁷ विभाव्य ततः स्वशरीरेण कुम्भं बोधिचित्ताद्या(द्य)चरुमयम्, मस्तकेन पात्रम्, अर्बुदेन पात्रस्थामृतस्वभावम्, हस्तद्वयेन ⁸कुण्डेष्वनन्तवासुकीरूपम्, कुचद्वयेन ⁹चन्द्रार्धसूर्याकारम्—एवं¹⁰रूपांश्च स्वशरीरे सर्वान् ¹¹भावयित्वा पूजां च कारयेत्¹² ।

अन्य[द्] विवर्जयन्नित्यं स्वशरीरेषु भावयेत् ।

सर्वं च स्वशरीरेऽस्ति¹³ तेन शरीरमुत्तमम् ॥ 52 ॥

पुनर्बाह्यपूजाचूर्णकृतमेकेन अर्चयेत् । ततश्चूर्णकृतमेकेन ¹⁴पञ्चाकारोऽस्ति, कथम् ? दधिना मध्ये कोषपानम्, अम्लेन¹⁵ म्लेच्छरूपम्, लवणेन वनचररूपम्, तैलेन आकाशचररूपम्, चूर्णकृतमांसेन पृथ्वीचररूपम्, तदूर्ध्वस्थ¹⁶मांसेन गोकुदहनं पञ्चाङ्कुशरूपम् । एवमेतेन¹⁷ बाह्यपूजां च कारयेत् ।

ततः स्वादस्य वर्णनमाह—चूर्णकृतरसून¹⁸सदृशम् । जलचर-मधु । वनचर-लवणम् । आकाशचर-तित्तम् । पृथ्वीचर-आर्द्रस्वादम् । पञ्चरस-पञ्चस्वादरूपं बाह्यकषायाभ्र(म्लं) ¹⁹इत्येतेन षड्रसमधिमुञ्चेत् ॥

॥ ²⁰इति ज्ञानोदयतन्त्रं समाप्तम् ॥

-
1. आमिषेण-च छ । 2. चित्तेन-क. ख. ग. घ. ङ. । 3. जलचरं-क. ख. ग. घ. ङ. ज. ञ. । 4. 5. 6. 'रूपम्' नास्ति-क. ख. ग. घ. ङ. छ. झ. ञ. । 7. रूपं-च. छ. । 8. कुण्डस्थे-क. ग. ज., कुण्डस्य-घ. च., कण्ठस्थे-ङ. ञ. । 9. अर्धचन्द्र-च. । 10. द्वया-क., रूपा-ख. ग. घ. च. झ. । 11. भावित्वा-क. ख. ग. घ. ङ. ज. ञ. । 12. अत्र च. मातृका समाप्ता । 13. स्थितेन-ङ. । 14. पञ्चाकारोऽपि-क. ग. च. । 15. अमृतेन-क. ख. घ. च. । 16. तदूर्ध्वमां-ङ., तदर्थस्तमां-क. ग., तदूर्ध्वमष्टमां-घ. । 17. मेतेनाचार्यपूजां-क. ख. ग. घ. ङ. च. छ. । 18. कृसर-क. ग., कृतरसेन-घ. ङ. । 19. इत्यनेन-ज. ञ. । 20. इति ज्ञानोदयपञ्जिकायां बाह्यात्मिक कुम्भसाधनं समाप्तम्-ख. ङ. छ. झ. ञ. ।

ज्ञानोदयतन्त्रस्य श्लोकार्धानुक्रमणी

अणिमादिगुणाश्चापि	15b	तस्मात् सर्वप्रयत्नेन	50b
अत एवाश्रयामन्या	31a	तस्मादचित्तयोगेन	35b
अतः सर्वाणि कर्माणि	19b	तस्याः समूहसंजाता	34b
अतः संलक्षयेत् तानि	12b	ता एवं योनिनाड्यः	31b
अथातः संप्रवक्ष्यामि	9a	तालुदेशे तु वीरेशः	5b
अन्यद् विवर्जयन्नित्यं	52a	तिस्रस्त्रया(स्त्विमा) प्रधाना या	32b
अप्रतिष्ठितनिर्वाण	44b	तुष्टाः सिद्धिं प्रयच्छन्ति	18b
अवधूती धर्मकायः	33b	तृतीयं खद्योतकाकार	13b
अवधूती मध्यदेशे	28b	तेन तेनैव योगेन	40b
आत्मना सर्वबुद्धत्वं	50a	तेनास्य सर्वसत्त्वाः	24b
इति संचिन्त्य योगोन्द्रः	21a	तैलवह्निरिवोद्दीप्ता	29b
इदं पश्यथ भूतानां	48a	द्रव्येषु काष्ठेषु च मृत्तिकासु	49a
उष्णीषं साधकं ज्ञात्वा	47b	द्वात्रिंशच्चतुर्दले चैव	26a
एता नाडिकाः सर्वाः	34a	धर्मचक्रं शुभकुले	46b
एवमभ्यस्यतः सम्यग्	14a	धर्मोदयामहोद्याने	27a
एवं संपूजिता स्तोत्रैः	18a	ध्यायात् समाहितो योऽसौ	43b
एषामन्यतमो योगः	8a	न च धर्मं समादाय	9b
कदलीपुष्पसंकाशं	29a	न तिथिनं च नक्षत्रं	9a
कर्मनित्यक्रमेणैव	37b	न पूजाऽपरं ध्यानं	10a
कर्ममारुतनिर्धूता	6b	न वन्दयेद्दीमान् देवान्	51a
किं पुनः सिद्धयः क्षुद्राः	15a	नारके अवोचिकण्ठे	47a
कुतो ध्यायान्मृत्युकाले	42a	निमित्तसिद्धिं जानीयात्	12a
कृत्वासौ संवरस्य	24a	निर्माणचक्रमध्यस्थ	6a
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां	17a	निर्वाणाकारं जानीयात्	41b
कोणेऽष्टस्तबकं ज्ञात्वा	2b	निर्विकल्पात्मको भूत्वा	22b
खाद्यभोज्यं तथा पिबेत्	38a	पञ्चमं तु सदालोकं	13c
गुरुपादप्रसादेन	4b	पञ्चस्वपि च वर्णेषु	22a
चक्रैः षड् ज्ञायते धीमान्	45a	पिण्डातीतं भवेत् पिण्डं	35a
चित्तादेव भवन्तीति	51b	पूजाभिर्बाह्यगुह्याभिः	23b
जिह्वां तालुगतां कृत्वा	3a	प्रत्यक्षे भावयेत् स्वाङ्गे	37a
ज्ञानमात्रं सदा तिष्ठेद्	11b	प्रथमं भरीचिकाकारं	13a
तत्राक्षसूत्रेण नियमो	8b	प्रधाना सर्वनाडीनां	30b

प्रवेशाद् वै भवेत् सिद्धिः	36a	शरीरार्थं च सर्वेषां	1b
मध्याह्ने भावयेद् योगं	39a	शिखास्थाने ललाटे च	25a
महाधर्मव्याख्यानस्थानेन	27c	शुक्लरक्षादिपुष्पेण	27b
महामुद्राह्वया सिद्धिर्	14b	शुक्ला यास्ति अथ कृष्णा	16a
येन येनैव भावेन	40a	स एव नियमः पीठे	10b
योगजं स्फारयेद् बुद्धं	3b	स(त) एव भावमात्रेण	42b
योगिनीभिश्च्युतो योगी	23a	स एवंभूतजातीयान्	46b
ललना प्रज्ञास्वभावेन	28a	सन्ध्यान्ते गुह्यचक्रे तु	39b
ललना संभोगिककायो	33a	सर्वं च स्वशरीरेऽस्ति	52b
लिङ्गेषु त्रिदलं पद्म	25b	सर्वेषु देवा मनसो विकारा	49b
वर्षं च बह्वतिक्रान्तं	41a	संपूज्य वीरयोगिन्या	17b
वामजापकरो नित्यं	20b	संपूर्णं खादयेत् पश्चात्	38b
वामोच्चारो भवेद् योगी	20a	संभोगकायरूपात्मा	32a
वामोद्गतं यत्र जगत्	19a	संयोगं पवनं भेदं	48b
वितानं वारसिंहं च	2a	संसार ऊर्ध्वगो वायुः	44a
विद्युच्छता(त)प्रतीकाशा	7a	सावधूती सविज्ञाय	30a
विनाशो निर्गतो वायु	36b	सिद्धौ च वसुधादीनां	11a
विभाव्योत्थापयेन्मन्त्री	7b	सिद्धयते जन्मनीहैव	4a
वीरवीरेश्वरीपूजां	16b	सिंहवद् विचरेत् स्त्रीभिः	21b
वीरस्य वीरजिह्वायां	5a	सैव निर्माणकं ज्ञेयं	46a
व्यञ्जनं च स्वरं तेषां	26b	हृदयाब्जगतं वायुं	43a

विशिष्टशब्दानुक्रमणी

अक्षसूत्र	8	अपराह्ण	6
अक्षिवहा	3	अपान वायु	13
अक्षोम्य	10	अप्रतिष्ठितनिर्वाण	12
अग्निमद्य	13	अभिमुखी (भूमि)	3
अग्निवदना (नाडी)	4	अभ्यन्तर	13
अग्ररूपिणी	7	अमिताभ	10
अग्रोत्तर	4	अमिताभा	3
अङ्गार	7	अमृत	14
अङ्कुरिक	3	अमृतधारा	8
अङ्गुष्ठद्वय	4	अमृतरूप	4
अचला (भूमि)	3	अमृतास्वाद	4
अचित्तयोग	11	अमृतीभूत	4
अजा (नाडी)	2	अमोघसिद्धि	10
अणिमा (गुण)	9	अम्ल	14
अद्वयज्ञान	3	अरहट्टघटिका	8
अद्वयसिद्धि	7	अर्चन	8
अधश्चक्र	5	अर्चिष्मती (भूमि)	3
अधिकार	4	अर्धचन्द्राभ	5
अधिमुक्ति	12	अर्धरात्र	6
अधोगत	12	अर्बुद	2, 14
अधोमुखी	6, 7, 10	अवधूती	10, 11
अध्यात्म	4, 13	अवीचि	12
अनन्त	14	अशेषाकाश	8
अनभिस्कारा	6	अश्रुवहा	3
अनाहत	2, 5	अश्व	13
अनुत्पाद (ज्ञान)	3	अष्टदल	4, 5, 10
अनुयोग	6	अष्टधातु	1
अनुरक्ता	8	अष्टशृङ्ग सुमेरु	2
अनुलोम	5	अष्टश्मशान	1
अन्त्रमालावहा	3	अष्टस्तबक	1
अपर गोदावरी	6, 13	अष्टस्तम्भ	1
अपरयोग	5, 8	अष्टाङ्ग	1

अस्तमनोदय	7	उत्तर (द्वार)	4
अस्थिपञ्जर	1	उत्तरायण	7
अस्थिवहा	3	उत्पन्नक्रम	4
अंकार	5	उदान वायु	13
आ (बीज)	3	उद्यान	1
आकर्षणी	13	उपक्षेत्र	3
आकार	6	उपछन्दोह	3
आकाश	6, 13	उपपीठ	3
आकाशगर्भ	3	उपमेलापक	3
आकाशचर	13, 14	उपवास	8
आकाशघातु	10	उपस्मशान	4
आग्नेय (द्वार)	4	उपसाधन	6
आग्नेयमण्डल	2	उपाय	2, 6-8, 10
आचार्य	6	उपाय (पारमिता)	3
आत्मतत्त्व	6	उपेक्षा	6
आत्मपीठ	6	उलूकास्या	4
आत्मपूजा	12	उष्णीष चक्र	11 12
आदर्शण (ज्ञान)	13	ऊर्ध्वशत्याकार	7
आदिरक्त	13	ऊरुद्वय	3
आधाराधेयमण्डल	1	ऊर्णाकोश	7
आद्य चरु	14	ऊर्ध्वग	12
आनन्द	6	ऊर्ध्वचक्र	5
आप	1, 6, 13	ऊर्ध्वमुखी	6
आर्द्रस्वाद	14	ऊर्ध्वस्थमांस	14
आलि	2, 6, 8	एकवर्ण	9
आलिकालि	7	एकार	6
आलिस्वभाव	2	एकीभाव	7
आहुति	8	ऐरावती	3
आहुः	5	ऐशान (द्वार)	4
इङ्गला-पिङ्गला	7	ओडियान	2, 6, 7
इहजन्म	5, 6	ओङ्	3
उग्रा (नाडी)	4	उंकार	6
उत्तम	14	उं बीज	4
उत्तमाङ्ग	2	ककार	5
उत्तरकुरु	6, 13	कक्ष	2
उत्तरदल	13	कक्षद्वय	3

कङ्कार-भङ्कार	7	कूर्मपात्र	13
कङ्काल	2	कृत (युग)	6
कण्ठ	3, 5, 6, 10, 12	कृत्यानुष्ठान	2, 13
कण्ठचक्र	11	कृष्ट (ष्ण)	5
कदलीपुष्प	7, 10	केचित्	4
कबन्ध	1	केशरोमवहा	2
करुणा	6, 7	कोणवासिनी	4
करोटक	2	कोशल	3
कर्कोतन	10	कोषपान	14
कर्मनित्यक्रम	11	क्षत्री	6, 13
कर्ममारुत	7	क्षयज्ञान	3
कर्ममुद्रा	6	क्षान्ति (पारमिता)	3
कलि (युग)	6	क्षीरधारा	7
कलिङ्ग	3	क्षीरवहा (नाडी)	2
कषाय	14	क्षुद्रसिद्धि	9
काकास्या	4	क्षेत्र	3, 13
काञ्ची	3	खगमुखाकार	2
कामपञ्चक	9	खगानना	3, 11
कामरूप	3	खङ्ग (सिद्धि)	9
काय	7, 10	खङ्गधारी (नाडी)	4
कायचक्र	4	खण्डकपाली	2
कायचतुष्टय	6	खण्डरोहा (नाडी)	2, 3, 13
कायत्रय	11	खद्योताकार	8
काल	6	खर्वरी	3
कालि	2, 6, 8	खेचरी	3
कालिस्वभाव	2	खेट	1
काशी	6	गगनोपम	8
काष्ठ	12	गङ्गा	6, 11
कांस(स्य)पात्र	13	गणा (नाडी)	4
कीरक	1	गन्ध	10, 13
कुचद्वय	14	गन्धवहा	2
कुण्ड	13, 14	गया	6
कुम्भ	14	गिरिगुहा	1
कुरुक्षेत्र	6	गुद	3, 4
कुलता	4	गुल्फ	4
कूटागार	1	गुरुपादप्रसाद	5

गुह्यचक्र	10,11,12	चन्द्र	6
गुह्यपूजा	9	चन्द्रफल	2
गृहदेवता	3	चन्द्रमण्डल	2
गो	13	चन्द्रसूर्य	7,14
गोकुदहन	13,14	चन्द्रार्ध	14
गोत्र	9	चरु	14
गोदावरो	3	चित्त	1,7,12
ग्राह्यग्राहक	7,10	चित्तचक्र	3,7
ग्रीष्म	6	चित्तघर	5
घना (नाडी)	3	चित्तविश्राम	8
घोरा (नाडी)	4	चिन्तामणि	5
घ्राण	10,13	चूर्ण	14
चक्र	1,4,7,11,12	चूर्णकृत	13,14
चक्रचतुष्टय	5,6	चूर्णकृतमांस	14
चक्रडाक	13	चैत्यालय	1
चक्रद्वय	5	चैरक	6
चक्रवर्तिनी	4	चोद्धता (छता = छोता)	3
चक्रवर्मिणी	3	छन्दोह	3,13
चक्रवेगा	3	जगदर्थ	6
चक्री (नाडी)	4	जगन्नाथ	6
चक्षु	10,13	जङ्घा(द्वय)	3
चक्षुर्द्वय	3	जठर	2
चण्डाक्षी	2	जप	8
चण्डाली	1	जम्बूद्वीप	6,13
चतुरस्र	1,2,5	जलचर	13,14
चतुर्दल	4,10,13	जानुद्वय	4
चतुर्देवी	5	जालन्धर	2,6,7
चतुर्द्वार	1	जिनमत	6
चतुश्चक्र	6	जिह्वा	5,10,13
चतुश्चक्रभावना योग	6	ज्ञान	1,5
चतुष्टयस्वभाव	6	ज्ञान (पारमिता)	4
चतुष्पथ	1	ज्ञानतत्त्व	6
चतुःपूजा	2	ज्ञानमुद्रा	6
चतुःषष्टिदल	5,10	ज्ञानोदय	1
चतुःसागर	6	ज्ञेय-ज्ञान	7
चतुरूप	6	ज्वलन्ती	7,8

ज्वालामाला	1	त्वङ्मलवहा	2
डाकिनी	2,4,13	त्वरित	6
डाकिनीस्वभावा	4	थुलामाला	1
डोम्बी	13	दक्षिण कर्ण	2,4
तत्त्व	2	दक्षिण गुल्फ	4
तत्त्वपीठ	6	दक्षिण दल	2,13
तथता	11	दक्षिण (द्वार)	4
तथागत	4,6,7,8	दक्षिण नासा	4
ताम्रधातु	13	दक्षिण नेत्र	4
तारा	6,10,13	दक्षिण पादाग्र	4
तालु	5	दक्षिणायन	7
तालुकमल	2	दधि	14
तालुदेश	5	दर्शनज्ञान (आदर्श)	2
तिक्त	14	दश दिक्	7
तिथि	8	दश पारमिता	4
तिलका	8	दश पीठ	4
तेज	6,13	दश भूमि	4
तेजिनी (नाडी)	4	दान (पारमिता)	2
तेजोधातु	1,10	दिग्दल	5
तैल	14	दिनरात्रि	7
तैलवह्नि	7,10	दीपाकार	8
तोयधातु	1,10	दुःख	6
त्रयरूप	13	दुःखज्ञान	2
त्रिकाय	2,13	दूरङ्गमा (भूमि)	3
त्रिकोण	2,5	देव	12
त्रिदल	4,10	देवता	11
त्रिभव	7,9	देवतातत्त्व	6
त्रिभुवन	13	देवतात्मक	11
त्रियान	13	देवशासन	12
त्रिरत्न	13	देवीकोट	3,6
त्रिलोक	2	देह	1,11
त्रिशकुनि	3	द्रव्य	12
त्रिशरण	13	द्रुमच्छाया	3
त्रिसन्ध्या	13	द्वय (हृदय)	3
त्रेता (युग)	6	द्वयद्वयैकरूपा	7
त्र्यक्षर	13	द्वात्रिंशत्पुरुषलक्षण	5

द्वात्रिंशद्दल	5,10	नाडीत्रययोग	6
द्वात्रिंशद्दलकमल	2	नाभि	3,5,6,10
द्वात्रिंशद्व्यञ्जन	5	नाभितल	2
द्वात्रिंशत्ताडी	5	नाभिमण्डल	6
द्वापर (युग)	6	नाभिमूल	5
द्वारपालिनी	4	नाभ्यक्ता क्रम	11
द्विपुट	1	नारक	12
धन्वाभ	2	नारिकेलपात्र	13
धर्म	3	नाररूपा	4
धर्मकर्म	12	नासिकाग्र	3
धर्मकाय	3 6 7,11	नित्यक्रम	11
धर्मचक्र	5,7,8,12	निमित्त	8
धर्मज्ञान	3	निमित्तसिद्धि	8
धर्मधातु	10,13	नियम	8
धर्मधात्वीश्वरी	10	नियोग	6
धर्ममुद्रा	6	निरभ्रगगन	8
धर्ममेघा (भूमि)	4	निरालम्बा	4
धर्मसमादाय	8	निरोध	6
धर्मोदय	1	निरोधज्ञान	3
धर्मोदया	10	निर्गत	11
धर्मोदयाकार	10	निर्माणक	12
धातु	1,13	निर्माणकाय	2,6,11
धूमाकार	8	निर्माणचक्र	4,5,7,8
ध्यान	5,8	निर्मिता	6
ध्यान (पारमिता)	3	निर्वाण	12
नक्षत्र	8	निर्वाणकारक	12
नखदन्तवहा	2	निर्वाणाकार	11
नगर	3	निर्विकल्प	9
नटी (नाडी)	3	निश्चल	11
नदीतीर	1	निषद्या	1
नर	13	निष्काशमार्ग	7
नाडिका	4,7,10,11	निष्पन्न	6
नाडी	2,3,4,7,10	नील	10
नाडीत्रय	4,7,11	नैऋत्य (द्वार)	4
नाडीत्रयभावना	10	पञ्चकाम	1
नाडीत्रयभावनायोग	7	पञ्चचक्र	1,13

पञ्चजाति	13	पवनभेद	12
पञ्चजिन	13	पश्चिम दल	2,13
पञ्चज्ञान	13	पश्चिम (द्वार)	4
पञ्चज्ञानविशुद्धि	13	पाचिनी	13
पञ्चडाक	13	पाण्डरा	6,10,13
पञ्चतथागत	1	पाताललोक	4,6,13
पञ्चदेवी	13	पातालवासिनी	4
पञ्चद्वीप	13	पात्र	13,14
पञ्चधातु	13	पादद्वय	2
पञ्चपीठ	13	पादपृष्ठ	3
पञ्चमण्डल	13	पादाङ्गुलि	3
पञ्चरस	14	पायु	3
पञ्चवर्ण	9	पाष्णि	4
पञ्चवायु	13	पाषाण	12
पञ्चसार	13	पिण्ड	11
पञ्चस्वाद	14	पिण्डातीत	11
पञ्चाकार	8,13,14	पित्त	6
पञ्चाङ्कुश	13,14	पित्तवहा	3
पञ्चेन्द्रिय	13	पीठ	2,6,8,13
पञ्चेन्द्रिय धातु	13	पीतवर्ण	6
पटा (नाडी)	3	पीयूष रस	7
पद्म	10	पुरीषवहा	3
पद्मज्वालिनी	13	पुरुषकार	6
पद्मडाक	13	पुल्लीर	6
पद्मनतेश्वर	3	पुल्लीरमलय	2
पद्मनृत्येस्वरी	13	पुष्टि	11
पद्मभाजन	13	पूजा	4,8,9,14
पद्मराग	10	पूयवहा	3
परचित्त ज्ञान	4	पूर्वदल	2,13
परपीठ	6	पूर्वद्वार	4
परम गम्भीर	4	पूर्वविदेह	6,13
परमपद	9	पूर्वाह्नि	6
परम मन्त्र	4	पृथ्वी	1,6,13
परमानन्द	6	पृथ्वीचर	13,14
परमार्थ-संवृति	7	पृथ्वीधातु	10

पेयल	14	बालसिंघा(ण) वहा	4
पेयल रूप	14	बाष्प	6
प्रकृतिपरिशुद्ध	1	बाह्य	2,13,14
प्रचण्डा	2	बाह्यपूजा	9,14
प्रज्ञा	2,6,8,10,13	बिन्दुरूप	4
प्रज्ञा (पारमिता)	3	बीजाक्षर	2,6
प्रज्ञावर्ण	7	बुद्ध	5,7
प्रज्ञोपाय	7,11	बुद्धकाय	6
प्रज्ञोपाययोग	9	बुद्धभूमि	2
प्रणिधान (परिमिता)	3	बोधिचित्त	2,14
प्रणिहिता	6	बोधिचित्त रूप	14
प्रतिमावन्दन	8	बोधिचित्तवहा	2,7,10
प्रत्यवेक्षणा (ज्ञान)	2,13	बोधिचित्तस्वभावा	7
प्रधाना (नाडी)	11	बोधिबीज	10
प्रनाडिका	2	बोधिसत्त्व	6,7
प्रबोध	7	ब्रह्मभुवन	10
प्रभाकरी (भूमि)	3	ब्रह्माण्ड	10
प्रभा (नाडी)	3	ब्राह्मण	6
प्रभामति(ती)	2	ब्राह्मण्यासार	14
प्रभास्वर	5	ब्राह्मी	13
प्रभास्वरा	4	भगा (नाडी)	3
प्रमुदिता (भूमि)	2	भाव	11,12
प्रयाग	6	भावरत्न	6
प्रवेश	7,11	भावाभाव	7
प्रवेश-निष्काश	7	भिक्षु	6
प्रवेश मार्ग	7	भूचरी	3
प्राणवायु	13	भूत	5,12
प्रेतपुरी	3	भूमि	2,3
फट्कार	6	भौतिक	5
फुम्फुसवहा	3	भ्रूमध्य	3
फुल्लित	11	मकार	6
फूफुस	1	मणिवज्रवितान	1
बल	9	मण्डल	1,4,6,8,9
बल (पारमिता)	3	मदन	9
बलवहा	3	मद्य	13
बला (नाडी)	2,3	मघु	14

मधुरा (नाडी)	2	महासुखकाय	6,7
मध्यदेश	10	महासुखचक्र	2,5
मध्यद्वीप	13	महोदधि	1
मध्यमण्डल	1	मातृका	10
मध्यमा	7	मातृकागृह	1
मध्याह्न	6,11	मामकी	6,10,13
मनस्	10,12,13	मारणी	13
मनःस्थान	1	मार्ग	6
मन्त्र	4	मार्गज्ञान	3
मन्त्रतत्त्व	6	मार्जालिक मद्य	13
मन्त्री	7	मालव	3
मरीचि	6	माहेन्द्रमण्डल	4
मरीचिकाकार	8	मांस	14
मरु	4	मांसवहा	2
मर्त्यलोक	3	मुक्ति	11
मर्मोद्घाटक (द्वार)	7	मुक्ति(क्ता)	10
मलमूत्र	12	मुख	3,4
मस्तक	14	मुदिता	6
मस्तकपृष्ठ	2	मूत्रवहा	6
महाकङ्काल	2	मृण्मय	12
महाज्ञान	4	मृत्तिका	12
महाधर्म	10	मृत्युकाल	12
महानाडी	2,3	मृदुयोग	6
महानासा	2	मेढ्र	3
महाबला	3	मेदोवहा	3
महाबला (चण्डा)	3	मेलापक	3,13
महाभिज्ञा	9	मैत्री	6
महाभैरव	3	म्लेच्छरूप	14
महाभैरवी	3	यकार	6
महामुद्रा	6	यमदंष्ट्री	4
महामुद्रासिद्धि	8,9	यमदाती	4
महायोग	6	यमदूतो	4
महावीर	3	यममथनी	4
महावीर्या	4	यंकार	6
महासंधी	6	यावज्जीव	11
महासाधन	6	युवति	9

योग	5,8,9,11	लिङ्ग	3,10
योगज	5	लोचना	6,10
योगपीठ	6	लोचनी	13
योगाभ्यास	5	लोहधातु	13
योगिनी	4,6,9	लोहितवहा	3
योगी	5,8,9	वज्रजटिल	3
योगीन्द्र	9	वज्रडाक	13
योनिनाडी	7,11	वज्रदेह	3
रक्त	5,14	वज्रधात्रीश्वरी	13
रक्तरूप	14	वज्रपञ्जर	1
रक्तवर्ण	6,13	वज्रप्रभा	3
रक्तवहा	6	वज्रप्राकार	1
रजा (नाडी)	3	वज्रभद्रा	3
रत्नडाक	13	वज्रमति	2
रत्नवज्र	3	वज्रयोगिनी	10
रत्नसंभव	10	वज्रवाराही	2,4,13
रस	10,13	वज्रवितान	1
रसना	10,11	वज्रसत्त्व	2,4,10
रसना-ललना	7	वज्रहंकार	3
रसवहा (नाडी)	2	वनचर	13,14
रसून	14	वन्दना	8
रंकार	6,10	वरुणभू	13
रामेश्वर	3	वर्ति(वस्ति)वहा	3
राहु	6	वर्तुल	2,5
रूप	10,13	वर्षा	6
रूपस्कन्ध	10	वसन्त	8
रूपिणी (नाडी)	2,13	वसन्ततिलक योग	8
रूप्यधातु	13	वंकार	5,6,10
लङ्केश्वरी	3	वाक्चक्र	3,7
लता (नाडी)	3	वात	6
लम्पाक	3	वाम	6,9
ललना	10,11	वामकर्ण	3,4
ललाट	10,11,12	वामगुल्फ	4
लवण	14	वामजाप	9
लंकार	6	वामनासा	4
लामा (नाडी)	2,13	वामनेत्र	4

वामपाणि	9	विश्वपङ्केह	4
वामपाद	4	विश्ववज्र	4
वामोच्चार	9	विश्वस्थात्	6
वामोद्गत	9	विहार	1
वायव्य (द्वार)	4	वीर	5,6,9
वायु	6,11,12,13	वीरजिह्वा	5
वायुधातु	1,10	वीरयोगिनी	9
वायुमण्डल	2	वीरेश	5
वायुवेगा	3	वीरेश्वरी	9
वारसिंह	1	वीर्य	13
वाराणसी	6	वीर्य (पारमिता)	3
वाराही	4	वुक्कच	1
वाराहीमूल	4	वुक्कवहा	3
वारुणमण्डल	2	वृक्षमूल	1
वासुकि	14	वैकार-वंकार	7
वाह	2	वेताल (सिद्धि)	9
विकटदंष्ट्री	2	वेदनास्कन्ध	10
विकार	12	वैमल्य	6
विचित्र	5,6	वैरोचन	4,10
विजनगृह	1	वैश्य	6
विज्ञानधातु	10	वैश्या	13
विज्ञानस्कन्ध	10	व्यञ्जन	5,10
वितान	1	व्यान वायु	13
विदिग्दल	5	शङ्का	9
चिनाश	11	शठा (नाडी)	3
विपाक	6	शब्द	10,13
विमर्द	6	शब्दवहा	2
विमला (भूमि)	3	शरत्	6
वि(वी)रमती	3	शरीर	1,11,12,14
विरमानन्द	6	शशा (नाडी)	2,4
विरूपाक्षा	3	शिखा	2
विलक्षण	6	शिखारन्ध्र	7
विलोम	5	शिखास्थान	10
विवर्च	6	शिरस्	2,5
विशुद्धि	5	शिला	12
विश्वडाक	13	शिवालय	1

शिशिर	6	षडिन्द्रिय	10
शोतहूँकार	12	षड्जिन	10
शीर्षं	5	षड्घातु	10
शील (पारमिता)	3	षड्रस	10, 14
शीशक घातु	13	षोडशदल	10
शुक्तिमात्र	13	षोडश शून्यता	5
शुक्ल	5	षोडश स्वर	5
शुभकुल	12	षोडशाब्द	5
शुभ्रमद्य	13	सदालोक	8
शुभ्रवर्णं	6	सद्गुरु	7
शूकरास्या	4	सन्ध्या	11
शूद्र	6	समता	13
शूद्री	13	समताज्ञान	2
शून्यता	5, 6, 7	समयचक्र	2
शून्यता-करुणा	7	समाधि	13
शूल	1	समानवायु	13
शोष	11	समा (नाडी)	4
शौण्डिनी	3	समापन्न	8
श्मशान	1, 2, 13	समुत्पन्नक्रम योग	9
श्यामा देवी	3	समुदय	6
श्रद्धा	13	समुदय ज्ञान	3
श्रावणैरक	6	सम्भोगकाय	2, 3, 6, 11
श्री चक्रसंवर	4	सम्भोगचक्र	5, 7
श्रीहेरुक	2, 3, 5, 9	सम्भोग-निर्माण	7
श्रोत्र	10, 13	सर्वस्कन्ध	10
श्लेष्म	6	सर्वाशाकाश	2, 5
श्लेष्मवहा	3	सर्वास्ति	6
श्रान	13	सव्य	6
श्रानास्या	4	सहज	2, 8
श्वेतवहा	4	सहजकाय	2
षट्चक्र	10, 12	सहजप्रज्ञायोग	7, 8
षट्चक्रविशुद्धि (योग)	10-12	सहजात्मिका	7
षट्तरा	10	सहजानन्द	6, 7, 10
षट्त्रिंशन्नाडी	2	संज्ञानस्कन्ध	10
षट्पटाकार	10	संनिपात	6
षट्स्कन्ध	10	संयोग	12

संवर	9	सौख्यदा (नाडी)	3
संवित्ति	6	सौराष्ट्र	3
संवृत्तिज्ञान	3	स्कन्धद्वय	3
संसार	10,12	स्तनयुगल	3
संस्कारस्कन्ध	10	स्तोत्र	9
सागर	6	स्थावर	6
साधक	9,11,12	स्थिति	11
साधन	6,9	स्थूल	7
साधुमती (भूमि)	3	स्नायुवहा	3
सानन्दा	8	स्निग्धा (नाडी)	2
सिता (नाडी)	3	स्पर्श	10,13
सिद्धि	8,9,11	स्पर्शवच्ची	10
सिन्धु	3,11	स्पर्शवहा	2
सीमान्तवहा	3	स्फरणयोग	8
सुख	11	स्फुटा (नाडी)	3
सुखस्थान	4	स्फूलयोग	4
सुखात्मक	12	स्मृति	4,13
सुखावती	12	स्वप्नप्रबोध	7
सुगत	7	स्वभावकुक्षि (नाडी)	4
सुदुर्जया (भूमि)	3	स्वभावशुद्ध	1
सुभद्रगुण	3	स्वयम्भू	12
सुभद्रा	3	स्वर	5,10
सुमेरु	2	स्वरवैरिण	3
सुराभक्षी	3	स्वरव्यञ्जन	10
सुवर्णद्वीप	3	स्वर्ग	6,13
सुवर्णं धातु	13	स्वर्गालय	3
सुविशुद्ध-धर्मधातु (ज्ञान)	2,13	स्वशरीर	1,11,12,14
सुवीरा	3	स्वाङ्ग	11
सुसूक्ष्मा	7	स्वाद	14
सूक्ष्म	2	स्वाभाविककाय	2
सूक्ष्म-स्थूल	7	स्वेद	14
सूचीमुखा (नाडी)	4	स्वेदरूप	14
सूर्य	6	स्वेदवहा	3
सूर्याकार	14	हयकर्णा	3
सृष्टि	11	हयग्रीव	3
सेवा	6	हरितवर्ण	6

हला (नाडी)	3	हृत्कमल	2,5
हस्तद्वय	14	हृदय	5,10
हस्ती	13	हृदयवहा	3
हिमालय	3	हृदयाब्ज	12
ह्रैकार	5	हृदयाम्भोरुह	12
ह्रौ (बीज)	3	हेर	10
ह्रैकार	2,5,6,10	हेरुक	2,5,9,10
हृच्चक्र	11	ह्रींकार	10